International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 • Website: www.ijfmr.com • Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान भारतीय शिक्षा में डॉ. जाकिर हुसैन के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

Santosh[1], Dr. Farah Mehar[2]

[1]Research Scholar, Department of Education, Maulana Azad University, Jodhpur, Rajasthan
[2]Assistant Professor, Department of Education, Maulana Azad University, Jodhpur, Rajasthan

शोध सार :

शिक्षा और मानव जीवन का जन्म-जन्मांतर से गहरा संबंध रहा है। शिक्षा आंतरिक वृद्धि और विकास की एक सतत एवं कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है, जिसकी अवधि जन्म से मृत्यु तक फैली होती है। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को सच्चा मानव बनाना तथा उसके जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाना है। यह न केवल व्यक्ति, बल्कि पूरे समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य अपनी विचार शक्ति, तर्क क्षमता, समस्या-समाधान कौशल तथा बौद्धिकता का विकास करता है। साथ ही, यह उसकी प्रतिभा, रुचियों, सकारात्मक भावनाओं और कार्यकुशलता को भी निखारती है तथा उसमें अच्छे मूल्य और संस्कार स्थापित करती है।

किन्तु भारत की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। छात्रों में बढ़ती अनुशासनहीनता तथा अध्यापकों में अपने उत्तरदायित्वों के प्रति गंभीरता की कमी जैसी समस्याएँ चिंताजनक हैं। इन समस्याओं ने न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित किया है, बल्कि मानवता के मूल्यों को भी कमजोर किया है, जिससे राष्ट्र के चिंतकों और बुद्धिजीवियों में चिंता व्याप्त है।

मुख्य बिन्दु : शिक्षा, मानव जीवन, आंतरिक विकास, सतत प्रक्रिया, जीवनपर्यंत शिक्षा, सांस्कृतिक विकास, सामाजिक विकास, विचार शक्ति, तर्क क्षमता, समस्या-समाधान कौशल, बौद्धिकता।

प्रस्तावना :

शिक्षा से तात्पर्य मूलतः व्यक्तित्व के समग्र विकास से है। विद्वानों और मनीषियों द्वारा प्रस्तुत शिक्षा की विभिन्न परिभाषाओं का मूल भाव भी यही है कि शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। किन्तु वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में निरंतर गिरावट की स्थिति से इसकी उपयोगिता एवं प्रभावशीलता पर प्रश्नचिह्न लगने लगे हैं, जो चिंता का विषय है।

वास्तव में शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य साधन है। मानव जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। जन्म से लेकर जीवन के अंतिम चरण तक शिक्षा की आवश्यकता बनी रहती है, क्योंकि इसी के माध्यम से मनुष्य का सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास संभव होता है। इस संदर्भ में महान शिक्षाशास्त्री जॉन डीवी का यह कथन अत्यंत सार्थक प्रतीत होता है— "शिक्षा ही जीवन है और जीवन ही शिक्षा है।"

जब तक शिक्षा की नींव चरित्रवान व्यक्तियों के हाथों में नहीं होगी, तब तक राष्ट्रीय जीवन के विकास की समस्या का समाधान संभव नहीं है। राष्ट्र को ज्ञानवान, प्राणवान, शक्तिमान एवं समुन्नत बनाने के लिए वर्तमान शिक्षा-पद्धति में व्यापक परिवर्तन नितांत आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. डॉ. जाकिर हुसैन के दार्शनिक विचारों, शिक्षा-दर्शन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।

2. डॉ. जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों पर प्रभाव डालने वाले दार्शनिक, आध्यात्मिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का विश्लेषण करना।
3. उनके द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों एवं सिद्धांतों का सम्यक् अध्ययन करना तथा उनकी प्रासंगिकता को समझना।
4. शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व में चिंतन, चरित्र एवं व्यवहार में उत्कृष्टता का विकास कैसे किया जा सकता है, इसका विवेचन करना।
5. शिक्षा के द्वारा एक आदर्श, नैतिक एवं सुखद समाज के निर्माण में योगदान की संभावनाओं का अध्ययन करना।

समस्या कथन :

वर्तमान भारतीय शिक्षा में डॉ. जाकिर हुसैन के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

शोध विधि :

किसी भी शोध कार्य में अध्ययन विधि का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। शोध समस्या की प्रकृति के अनुसार ही उपयुक्त शोध विधि का निर्धारण किया जाता है, क्योंकि यही विधि अध्ययन की दिशा और निष्कर्षों की विश्वसनीयता को सुनिश्चित करती है। प्रस्तुत शोध कार्य दार्शनिक विधि पर आधारित है, जिसके अंतर्गत विचारों, सिद्धांतों एवं मूल्यों का तार्किक, विश्लेषणात्मक एवं समालोचनात्मक अध्ययन किया जाता है।

दार्शनिक विधि के माध्यम से विषय के विभिन्न आयामों का गहन चिंतन कर उनके सार्थक निष्कर्ष प्राप्त किए जाते हैं, जिससे शोध की गहराई और व्यापकता में वृद्धि होती है।

विश्लेषण :

प्रस्तुत शोध में डॉ. जाकिर हुसैन के दार्शनिक विचारों एवं शिक्षा-दर्शन का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इसके अंतर्गत उनके द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा के सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, जामिया मिलिया इस्लामिया के विकास में उनके योगदान का भी अध्ययन किया गया है।

इस शोध में नारी शिक्षा, धार्मिक शिक्षा तथा बालक के सर्वांगीण विकास से संबंधित उनके विचारों का भी समावेश किया गया है। इसके अतिरिक्त शिक्षा प्रबंधन, राष्ट्रीय एकता में शिक्षा की भूमिका, नैतिक चरित्र निर्माण तथा व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में उनके दृष्टिकोण का भी विश्लेषण किया गया है।

अंततः, उनके शिक्षा-दर्शन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन कर यह समझने का प्रयास किया गया है कि उनके विचार आज के शिक्षा तंत्र में किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

निष्कर्ष :

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन एक विश्वप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, उच्चकोटि के चिंतक, दूरदर्शी राजनेता, स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी, कुशल लेखक एवं आदर्श शिक्षक थे। उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान शिक्षा के क्षेत्र में रहा। वास्तव में महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित बुनियादी शिक्षा को आगे बढ़ाने का श्रेय डॉ. हुसैन को ही जाता है, क्योंकि गांधीजी के निधन के पश्चात उन्होंने ही देशभर में बुनियादी शिक्षा कार्यक्रम को लागू करने का गंभीर प्रयास किया।

डॉ. हुसैन ने जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आजीवन इसे अपने परिश्रम एवं समर्पण से सशक्त बनाया। उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वे गांधीवादी आदर्शवाद के समर्थक होने के साथ-साथ मानवतावाद से भी गहराई से प्रभावित थे। उनके दर्शन में मानवतावाद के सभी प्रमुख तत्व विद्यमान हैं।

शिक्षा-दर्शन की दृष्टि से डॉ. जाकिर हुसैन आदर्शवाद, यथार्थवाद एवं मानवतावाद का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित तत्त्वों, उद्देश्यों, शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम एवं अनुशासन संबंधी विचारों में इन तीनों दार्शनिक धाराओं का सुंदर समन्वय दृष्टिगोचर होता है। सत्य के प्रति

निष्ठा, नैतिक मूल्यों में आस्था तथा धार्मिकता उनके आदर्शवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है, जबकि जीवन की उपयोगिता, वास्तविकता एवं व्यवहारिकता पर उनका जोर यथार्थवादी दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

डॉ. हुसैन के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को इस प्रकार विकसित करना है कि वह समाज में समुचित समायोजन कर सुखी एवं संतुलित जीवन व्यतीत कर सके। उन्होंने आत्मनिर्भरता पर आधारित शिक्षा का समर्थन करते हुए यह भी कहा कि व्यक्ति अपने व्यवसाय को निःस्वार्थ भाव से समाज के हित में करे, जो उनके प्रयोजनवादी एवं मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रकट करता है।

वे बाल-केंद्रित शिक्षा के समर्थक थे, किन्तु उसका उद्देश्य केवल बालक का विकास न होकर समाज एवं राष्ट्र का कल्याण भी था। इस प्रकार वे आदर्श चरित्रयुक्त नागरिकों के निर्माण के पक्षधर थे, जो राष्ट्रहित में कार्य करें। उनके विचारों में आदर्शवाद एवं यथार्थवाद का संतुलित समन्वय दिखाई देता है।

अंततः, शिक्षा में यथार्थवाद का उदय संकीर्ण, पुस्तकीय एवं अस्पष्ट पाठ्यक्रम की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ, और डॉ. हुसैन ने अपने विचारों के माध्यम से शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, उपयोगी एवं जीवनोपयोगी बनाने पर बल दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अजातशत्रु : डॉ० जाकिर हुसैन,चित्रकला संगम दिल्ली, 1970
2. अब्दुल लतीफ, तीसरे राष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसैन, माडर्न पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-1982
3. अली, बी० शेख, जाकिर हुसैन लाइफ एण्ड टाइम, विकास पब्लिशिंग-नई दिल्ली-1997
4. अहलूवालिया, बी०के०, जाकिर हुसैन ए स्टडी
5. जुनेजा, एम०, डॉ० जाकिर हुसैन, राजपाल एण्ड सन्स न्यूडेलही 1974
6. डॉ० जाकिर हुसैन और उनकी उर्दू खिदमत, मुसन्निफ, हैदराबाद, (1996)
7. डॉ० जाकिर हुसैन डॉ० जाकिर हुसैन मेमोरियल कमेटी हैदराबाद-1972
8. डॉ० जाकिर, जाकिर, अबूखान की बकरी और चन्द और कहानियां, मक्तबा जामिया नई दिल्ली-1963